E-Content for student of Patliputra University Patna Bihar

subject -Hindi Hons

Course-BA H part-3 paper-6,unit-3

Topic- उपमा,विभावना और अतिशयोक्ति अलंकारों के लक्षण और उदाहरण स्पष्ट करें।

प्रस्तुतकर्ता-डॉ प्रफुल्ल कुमार,एसोसिएट प्रोफेसर,आर आर एस कॉलेज मोकामा,पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना।

(1) उपमा अलंकार-

संस्कृत में काव्यप्रकाशकार ने लिखा है- **साधर्म्यमुपमा भेदे।** अर्थात् लक्षण हुआ- भिन्न पदार्थों के सादृश्य प्रतिपादन को उपमा कहते हैं। उप(सामने) मा-(मापना) अर्थात एक वस्तु के सामने दूसरी वस्तु को रखकर उसकी समानता दिखलाना ही उपमा है।

उदाहरण- बैठी है सीता सदा राम के भीतर

जैसे विद्युति घनश्याम के भीतर।

यहाँ सीता को राम के भीतर उसी प्रकार बैठी हुई दिखलाया गया है जिस प्रकार बिजली बादल के भीतर होती है। अतः सीता का बिजली से तथा राम का बादल से समानता दिखलाने के कारण उपमा अलंकार है।

(2) विभावना अलंकार - कारण के अभाव में कार्य की उत्पत्ति का वर्णन विभावना अलंकार है। साहित्य दर्पण में लिखा गया है-

विभावना बिना हेतु कार्योत्पत्तिर्यदुच्यते।

वि (विशेष) + भावना (कल्पना) । सामान्यत: कारण के रहने पर ही कार्य होता है, परंतु कारण के अभाव में कार्य का होना विशेष कल्पना है। अतः विभावना (विशेष भावना) यही है।

उदाहरण- बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।

कर बिनु कर्म करे विधि नाना

आनन रहित सकल रस भोगी

बिन बानी बकता बड जोगी। यहाँ अंगों के अभाव में भी चलना, सुनना आदि कार्य होने का वर्णन किया गया है। अतः विभावना अलंकार है।

(3) अतिशयोक्ति-

उपमेय को छुपाकर उपमान के साथ उसकी अभेद प्रतीति करना अतिशयोक्ति अलंकार है। अतिशयोक्ति का अर्थ है अतिशय उक्ति अर्थात बढ़-चढ़कर बातें करना। उपमेय को सर्वथा छिपाकर उपमान को रख देना और दोनों में अभेद की प्रतीति कराना अतिशयोक्ति अलंकार है।

जैसे- नायिका के सुंदर मुख को देखकर कोई कहे -**'अरे यार यह चांद देखो।'** तो यहां मुख उपमेय सर्वथा छुपा हुआ है और चांद उपमान को रखकर मुख और चांद में अभेद दिखलाया जा रहा है। अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।

उदाहरण- अद्भुत एक अनुपम बाग

जुगल कमल पर गजवर क्रीडत

तापर सिंह करत अनुराग।

यहां उपमेय का नाम न लेकर चरण के लिए युगल कमल, जांघन के लिए गजवर और कमर के लिए सिंह उपमानों द्वारा क्रमशः उनके बीच अभेद की प्रतीति करायी गई है। अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।

****